दिलचस्प दीमकें

कुदसिया जैदी

इतवार के दिन कमल अपने पिता के साथ यात्रा कर रहा था कि एक जगह जंगल में गाड़ी खराब हो गई। गाड़ी का ड्राइवर बोला :

"गाड़ी बीस पच्चीस मिनट में ठीक होगी। इतने में आप किसी पेड़ के नीचे बैठ कर आराम कर लें।"

कमल और उसके पिता ने पास ही एक घने पेड़ के नीचे दरी बिछाई और आराम से लेट गए। पिता जी तो कुछ देर में ही खर्राटे लेने लगे। कमल उठ कर जंगल की सैर को चल खड़ा हुआ।

कुछ दूर ही गया होगा कि उसने एक छोटे से दीमक के टीले के पास एक दीमक को बैठे हुए पाया। उसने इससे पहले कभी इतनी बड़ी दीमक नहीं देखी थी। अनायास उसके मुँह से निकल पड़ा, "हो न हो, यह दीमक के पिता जी हैं।"

दीमक ने जब यह सुना तो तुरन्त बोली, "बिल्कुल गलत! मैं तो दीमक की बस्ती का सिपाही हूं।"

कमल ने कहा, "अच्छा तो क्या दीमक की बस्ती में भी सिपाही होते हैं जो नटखट दीमकों को पकड़ कर जेल में बन्द कर देते हैं?"

सिपाही बोला, "जी नहीं। क्षमा कीजिए। नटखट मनुष्य तो केवल आपकी दुनिया में ही होते हैं। हमारी बस्ती में कोई उपद्रव नहीं करता। सब बस्ती वाले दिन रात अपनी ड्यूटी के अनुसार अपना काम करते रहते हैं।"

कमल ने पूछा, "तो फिर आपकी बस्ती में सिपाहियों की क्या आवश्यकता है?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "हम में फौजी सिपाही भी हैं और पुलिस के सन्तरी भी। फौजी सिपाही बस्ती की र क्षा करता है और पुलिस का सन्तरी ट्रैफिक का प्रबन्ध। क्या आप हमारे जीवन के बारे में और जानना चाहते हैं?"

कमल, जो सिपाही की बातचीत बहुत ध्यान से सुन रहा था, बोला, "जी हाँ, बिल्कुल। आप आरम्भ कीजिए।"

सिपाही ने अपनी कहानी इस प्रकार आरम्भ की :

"दुनिया में पंद्रह सोलह सौ प्रकार की दीमक होती हैं। बहुत सी बातों में उनका स्वभाव एक दूसरे से भिन्न होता है। मैं इन सब की ऐसी आदतों के विषय में ही बताऊंगा जो एक दूसरे से मिलती जुलती हैं। दीमक कभी अपनी बस्ती शहद की मक्खी की भाँति खुले स्थान में नहीं बनाती। पेड़ के खोखले तने में या ज़मीन के नीचे ही नीचे इसकी बस्ती दूर तक चली जाती है और कभी-कभी बाहर से इसकी सूरत मिट्टी के एक छोटे से टीले के

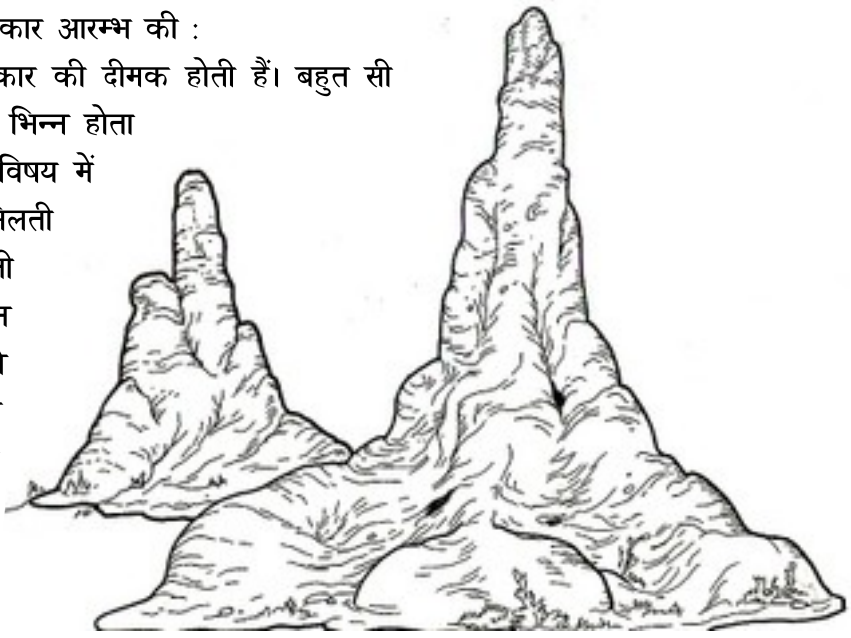

समान होती है। कभी कभी तो टीला भी नहीं होता। ध्यान से देखने पर जान पड़ता है कि वहाँ दीमक की बस्ती भी है।

"हमारी प्रत्येक बस्ती में शहद की मक्खी और च्यूँटी की भाँति रानी का होना आवश्यक है परन्तु हमारे यहाँ राजा भी होता है। कुछ बस्तियों में तो राजा रानी के कई-कई जोड़े होते हैं।"

कमल ने पूछा, "एक ही बस्ती में इतने राजा रानी आपस में लड़ते नहीं?"

सिपाही ने कहा, "जी नहीं, सब शाही जोड़े अलग अलग कमरों में रहते हैं। राजा रानी का तो कहना ही क्या है, इनके तो बच्चे भी आपस में नहीं लड़ते।"

"क्या रानी के बहुत से बच्चे होते हैं?" कमल ने पूछा।

सिपाही ने कहा, "जी हाँ, लाखों। हमारी रानी एक मिनट में लगभग साठ अंडे देती है।"

कमल ने अचम्भे से कहा, "ओहो! इतने बच्चे! अच्छा यह तो बताओ कि आपकी रानी कितनी बड़ी होती है?"

सिपाही ने उत्तर दिया : "रानी अधिकतर तो कमेरी दीमक से दो तीन हजार गुनी बड़ी होती है परन्तु कुछ बस्तियों में रानी कमेरी से बीस गुना बड़ी होती है। वह इतनी मोटी होती है कि अपने मुन्ने-मुन्ने हाथ पैरों से कुछ नहीं कर सकती। शाही कमरे में पड़ी पड़ी अंडे दिया करती है। रानी की सेवा के लिए हजारों कमेरियाँ हर समय उपस्थित रहती है।"

कमल ने पूछा, "कमेरियाँ क्या होती हैं?"

सिपाही बोला, "बस्ती की काम करने वाली दीमक को कमेरी कहते हैं। कमेरियाँ कई तरह की होती है। जैसे इंजीनियर, माली, दवाइयाँ बनाने वाली, राज मजदूर, धाय, नल बनाने वाली और रसोइया। इन सब के काम निश्चित होते हैं। क्या मजाल जो किसी से काम में चूक हो जाए।"

कमल ने पूछा, "क्या यह सब की सब दीमक रानी की सेवा करती हैं?"

सिपाही ने कहा, "जी! हम सब बस्ती वाले अपनी रानी की कोई न कोई सेवा करते हैं। मामाएं तो हर समय रानी को खाना खिलाती रहती हैं। कुली अंडों को ढो ढो कर कमरों में ले जा कर रखते हैं। इन कमरों में कुछ कमेरियाँ हर समय अंडों को चाटती रहती हैं। अंडे चाटने से साफ भी रहते हैं और मुँह की गरमी से सिकते भी हैं। इस बात का ध्यान भी रक्खा जाता है कि अंडा एक ही करवट पर पड़ा पड़ा खराब न हो जाए। इसी लिए उसे उलटते पलटते रहते हैं। धाएँ रानी को चूमती चाटती हैं। प्यार का प्यार और सफ़ाई की सफाई। परन्तु बस्ती में सिपाही साफ करने वाली दीमक की बड़ी सख्ती से देखभाल करते हैं कि कहीं वह प्यार के जोश में रानी के स्वादिष्ट चरबीदार शरीर को काट कर न खा जाए। इतनी कड़ी देखभाल होने पर भी रानी के नरम नरम शरीर पर सैकड़ों घावों के निशान होते हैं।

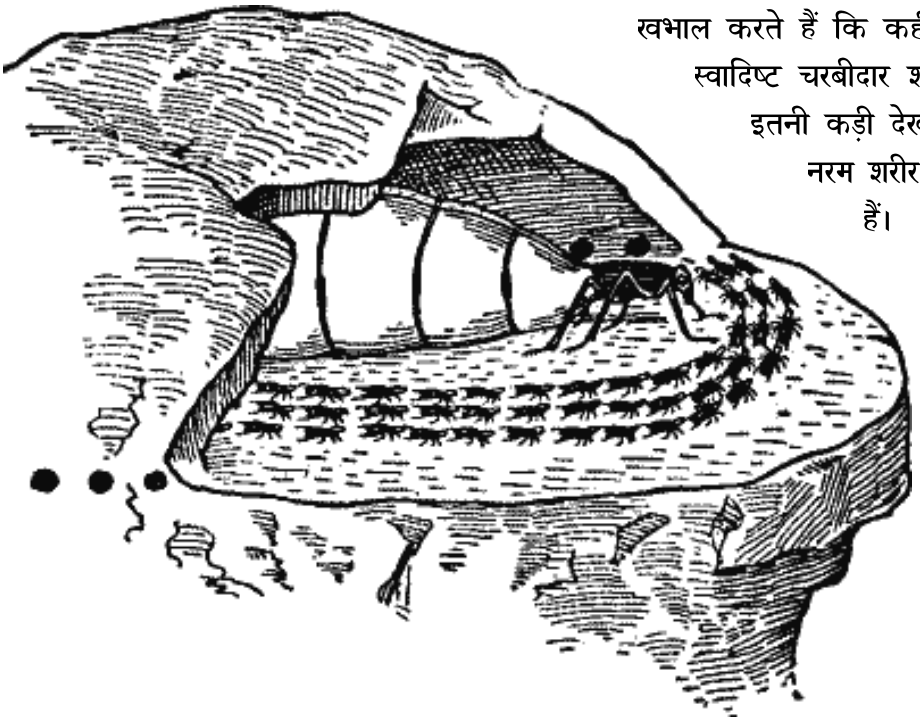

"रानी के चारों ओर हर समय सेवकों की भीड़ लगी रहती है। आने जाने वालों को कायदे में रखने के लिए बहुत से पुलिस के सिपाही हर समय चक्कर बना कर रानी को घेरे खड़े रहते हैं।"

कमल ने पूछा, "आपकी रानी कितने बरस तक जीवित रहती है?"

सिपाही ने कहा, "रानी चार पाँच साल जीवित रहती है। जहाँ अंडे देने में कमी हुई मामाएँ उसका खाना बन्द कर देती हैं और रानी धीरे-धीरे मर जाती है। इस तरह रानी को मारने का अभियोग किसी एक पर नहीं लगता, सारी बस्ती पर ही लगता है। इधर रानी भूख के मारे निढाल हुई उधर कमेरियाँ उससे लिपटीं और देखते ही देखते उसके मोटे और स्वादिष्ट शरीर को चट कर जाती हैं।"

कमल ने कहा, "यह तो आप बहुत बुरा करते हैं! क्या राजा भी रानी की सहायता नहीं करता?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "राजा तो रानी से कद में बहुत छोटा होता है! वह डरपोक और दब्बू भी इतना होता है कि रानी के पेट की ओट में दुबक कर बैठा रहता है। वह रानी की क्या सहायता कर सकता है?"

"यदि हम रानी को मार न डालें तो खाने की कमी से हमारी सारी बस्ती ही समाप्त हो जाए, इस लिए कि एक रानी दिन भर में बीस हजार दीमकों के बराबर खाना खाती है। औरों को बचाने के लिए रानी का बलिदान आवश्यक समझा जाता है।"

कमल ने कहा, "यह तो ठीक है परन्तु यह बताइए कि यदि आपकी बस्ती में रानी न हो तो आपकी बस्ती कैसे चल सकती है?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "रानी भी तो बस्ती वालों के बिना जीवित नहीं रह सकती। उसकी सेवा कौन करेगा?"

कमल ने कहा, "हाँ, आप यह भी ठीक कह रहे हैं। क्या आप भी रानी की कोई सेवा करते हैं?"

सिपाही ने कहा, "हमारा काम बस्ती और रानी दोनों की रक्षा करना है। रानी के पास हर समय कमेरियों की भीड़ लगी रहती है। एक ओर खाना खिलाने वालियों की और दूसरी ओर अंडे और बीठ उठाने वालियों की। इन सबको कायदे में चलाना हमारा काम है। बस्ती की अंधेरी गलियों में आने जाने का प्रबन्ध भी हम करते हैं। यदि कभी काम अधिक होने के कारण गलियों में भीड़ अधिक हो जाती है तो हम उसी समय ट्रेफिक एक ओर का कर देते हैं। एक गली आने वालों के लिए और एक जाने वालों के लिए निश्चित हो जाती है।"

कमल ने कहा, "हां, हां, देहली के कई बाजारों में भी एक ओर का ही ट्रैफिक होता है।"

सिपाही ने कहा, "हम ट्रैफिक का प्रबन्ध करने के साथ-साथ कभी-कभी कुलियों को अंडे उठाने या राज मजदूरों को मरम्मत करने में भी सहायता करते हैं।"

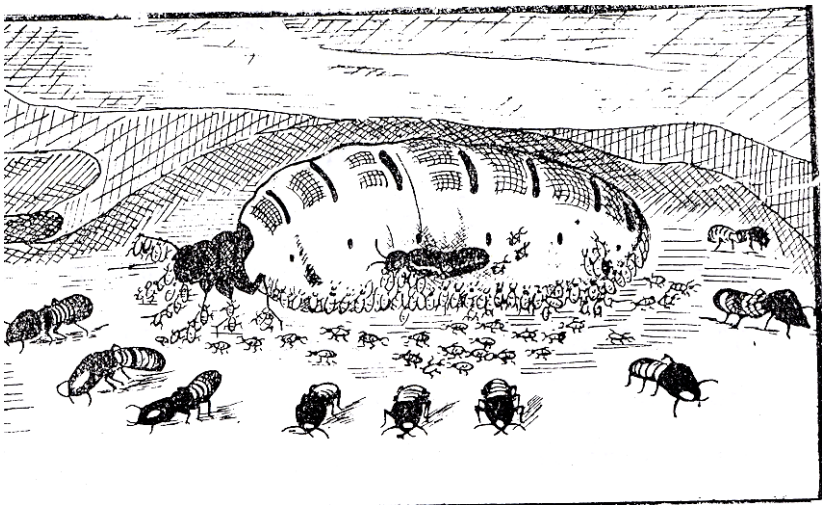

कमल ने कहा, "मेरी समझ में यह तो आ गया परन्तु आप बस्ती की रक्षा किस तरह करते हैं? शत्रु का सामना करने के लिए आपके पास तोप, बन्दूक या गोला बारूद तो है नहीं!"

सिपाही ने कहा, "आपने मेरे शरीर की बनावट देखी कि शरीर के मुबाकले में मेरा सिर कितना बड़ा है और फिर मेरे सींग जैसे जबड़े तो देखिए कितने बड़े-बड़े हैं! इन्हीं हम च्यूँटियों का सामना करते हैं।"

कमल ने पूछा, "सामना आप किस तरह करते है?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "प्राणों पर खेल कर हम बस्ती को बचाते हैं। कुछ लम्बी कहानी है, इसे ध्यान से सुनिए। दीमक दुर्बल कीड़ा होने के कारण अपने शत्रु का सामना मैदान में आकर नहीं कर सकती। अपनी दुर्बलता को भली भाँति जानने के कारण वह जमीन के अन्दर रहती है और घर की छत, जो बाहर से टीले की तरह होती है, इतने पक्के मसाले से बनाती है कि यदि मनुष्य इसे हथौड़े से तोड़ना चाहते तो भी कठिनता से ही टूटती है।"

कमल ने पूछा, "दीमक मसाला कहाँ से लाती है"

सिपाही ने उत्तर दिया, "यह मसाला दीमक अपने आप ही बनाती है और उसे वह बीठ, रेत और लकड़ी के कणों को मिला कर तैयार करती है।"

कमल ने कहा, "तो फिर आपका छत्ता क्या हुआ अच्दा खासा सीमेंट का किला हो गया! शत्रु तो उस पर आक्रमण कर ही नहीं सकता।"

सिपाही ने कहा, "कभी-कभी बस्ती के रोशनदानों में से च्यूँटी हम पर आक्रमण कर देती है।"

कमल ने पूछा, "तो आप इस आक्रमण को किस तरह रोकते हैं?"

सिपाही ने कहा, "आक्रमण की सूचना संकट की घंटी से सब सिपाहियों को मिल जाती है। यह सब सिपाही अपनी अंधेरी बैरकों में बैठे घंटी बनजे की इन्तजार करते रहते हैं।"

कमल ने पूछा, "आपको अंधेरे में दिखाई कैसे देता होगा?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "हमारी बस्ती में राजा, रानी और पंख वाली दीमक को छोड़कर और किसी की आँखें नहीं होती। हम लोग कानों से नुसकर और मुँह से छूकर सब काम करते हैं।"

कमल ने पूछा, "तो क्या आप भी ....."

सिपाही ने बात काट कर कहा, "आप शरमाते क्यों हैं? साफ कहिए ना। जी हाँ, मैं भी अपने भाई बन्धओं की तरह अंधा हूँ। हमारे यहाँ अंधा होना कोई बीमारी या कमजोरी नहीं समझी जाती। हम लोग तो सभी अंधे होते हैं और अंधेरे घुप में आँखों की आवश्यकता भी क्या है?"

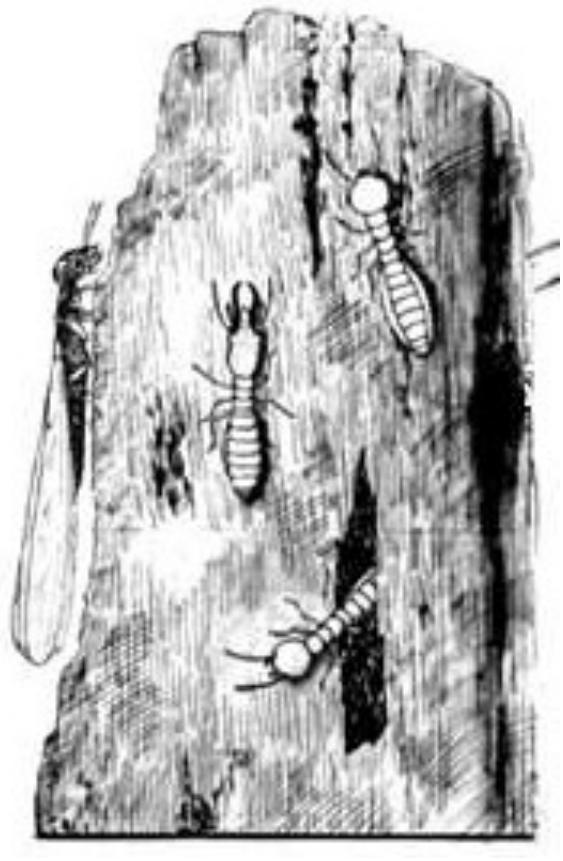

कमल ने कहा, "छोड़िए इस बात को। आप तो मुझे यह बात रहे थे कि संकट की घंटी सुनते ही आप अंधेरी बैरेकों में से निकल आते हैं। तो बताइए फिर क्या होता है?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "हमारी सदा की बैरिन च्यूँटी दिन रात हमारी बस्ती के बाहर चक्कर लगाती रहती है कि कहीं कोई छेट मिले तो हम पर आक्रमण कर दे और यदि संयोग से बस्ती का रोशनदान, जिसे हम हवा आने-जाने के लिए बनाते हैं, उसे दिखाई दे जाता है तो वह अचानक आक्रमण कर देती है। इसीलिए रोशनदानों पर सिपाहियों का पहरा रहता है। जहाँ सिपाही ने च्यूंटी की आहट सुनी उसी समय अपने सख्त जबड़ों से वह ज़मीन पीटना आरम्भ कर देता है। इस घंटी के सुनते ही सब सिपाही बैरेकों से बाहर निकल आते हैं और संकट के स्थान पर पहुँच जाते हैं। वे बड़े-बड़े मज़बूत सिरों से छोटों को बन्द करने की कोशिश करते हैं।"

कमल ने पूछा, "तो क्या सब सिपाही छेद के पास पहुँच जाते हैं?"

सिपाही ने कहा, "जी नहीं, कुछ तो छेद को अपने सिरों से बन्द करने में लग जाते हैं और कुछ बस्ती का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लेते हैं। संकट के समय सदा ही बस्ती पर सिपाहियों का राज होता है। संकट की घंटी सुनने के बाद कुछ समय के लिए तो सचमुच बस्ती में कुछ खलबली सी मच जाती है परन्तु मार्शल-ला के हाते ही सब प्रबन्ध सिपाहियों के हाथ में आ जाता है और सब मोरचों पर पहरा बहुत कड़ा हो जाता है।"

कमल ने पूछा, "सिपाही च्यूँटी को अन्दर आने से कैसे रोकते हैं?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "सिपाही छेद के सामने खड़े हो कर अपने पैने जबड़ों को अंधाधुंध चलाने लगते हैं और च्यूँटी के शरीर का जो भाग भी उनके मुँह में आता है उसे भंभोड़ डालते हैं। च्यूँटी यदि भाग जाए तो उसकी कुशल है नहीं तो लड़ाई लम्बी खींचती है और सिपाही शत्रु को डराने के लिए जोर-जोर से शोर मचाते हैं और बार-बार सीटियाँ बजाते रहते हैं जिसे गज़ों दूर खड़ा हुआ शत्रु भी उसे सुन कर डर जाए। यह सब कोशिश होने पर भी दुष्ट च्यूँटी अधिकतर छेद में घुस ही आती है।"

कमल ने आतुरता से पूछा, "तो फिर क्या होता है?"

सिपाही ने कहा, "होता क्या है। बस्ती के जिस भाग में लड़ाई हो रही हो वहाँ राज-मजदूर और सिपाही मिल कर जल्दी-जल्दी दीवार चुन कर उस भाग को बस्ती से अलग कर देते हैं।"

कमल ने पूछा, "राज आदि दीवार किस तरह चुनते हैं?"

सिपाही ने कहा, "पहले तो सिपाही आकर उस छेद को, जहाँ दीवार चुनी जाएगी, अपने थूक से गीला और नरम कर देता है। फिर एक दीमक आकर छेद में बीठ करती है और दूसरी मुँह में रेत या लकड़ी का कण ला कर बीठ पर रख देती है और इस प्रकार हज़ारों राज-मजदूर और सिपाही मिल कर जल्दी-जल्दी रद्दे पर रद्दा रखते चले जाते हैं और थोड़ी सी देर में लड़ाई के मैदान से बस्ती को जाने वाले सब रास्ते बन्द कर दिए जाते हैं।"

कमल ने कहा, "मगर यह तो बताइए कि जो सिपाही च्यूँटी को रोके हुए हैं उनका क्या होता है?"

सिपाही ने बेपरवाही से उत्तर दिया, "होता क्या है, वह वहीं च्यूँटियों से लड़-लड़ कर बस्ती पर अपने प्राण निछावर कर देते हैं। उन्हें या तो च्यूँटियां उठा कर अपनी बस्ती में ले जाती हैं और यदि वे भाग निकलते हैं तो भूख से मर जाते हैं। कभी-कभी च्यूँटी जीते हुए भाग पर अधिकार भी कर लेती है या केवल सिपायिों को उठा कर ले जाती है, बस्ती पर अधिकार नहीं करती।"

कमल ने पूछा, "सिपाही भूख से क्यों मर जाते हैं, खाना क्यों नहीं खाते?"

सिपाही ने कहा, "हमारी बस्ती में कमेरी को छोड़ कर और कोई अपने आप खाना नहीं खा सकता। कमेरी ही राजा, रानी, पंख वाली दीमक और सिपाहियों को अपने पेट में से पचाया हुआ खाना निकाल कर खिलाती है।"

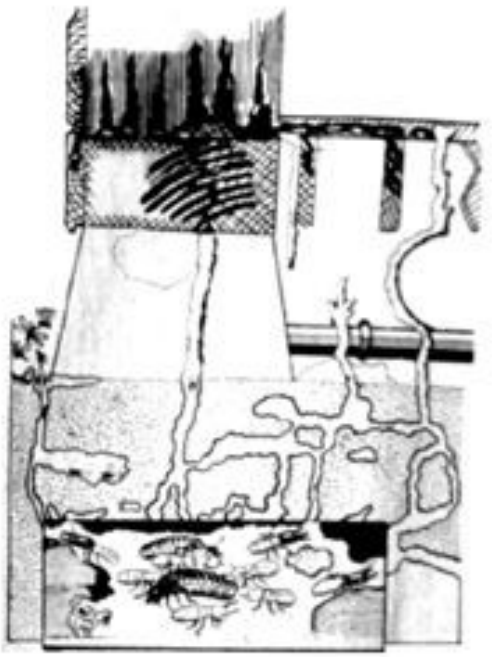

कमल ने कहा, "इसका क्या मतलब?"

सिपाही ने कहा, "हमारे जबड़ों की बनावट कुछ ऐसी होती है कि हम यदि खाने के ढेर पर भी बैठे रहें तो अपने आप एक कौर भी मुँह में नहीं डाल सकते।"

कमल ने चिन्ता भरे स्वर में पूछा, "तो अब आको कौन खाना खिलाएगा?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "मैं लड़ाई के मैदान से आ रहा हूँ। कुछ ही देर में मुझे बहुत आनन्द की नींद आ जाएगी और भूख मालूम भी नहीं होगी।"

कमल ने कहा, "आप बहुत वीर और प्राणों पर खेलने वाले सिपाही हैं कि इन सब बातों को जानते हुए भी बेधड़क लड़ाई के मैदान में कूद जाते है!"

सिपाही ने कहा, "वीरता की इसमें क्या बात है। यह तो सिपाही का सौभाग्य है कि वह लड़ाई के मैदान में काम आए। सिपाही इसी दिन के लिए जन्म लेता है।"

कमल ने पूछा, "आपकी बस्ती में भला कितने सिपाही होते होंगे?"

सिपाही ने उत्तर दिया, "प्रत्येक बस्ती में बीस प्रतिशत सिपाही होते हैं यानी प्रत्येक पाँच कीड़ों में एक सिपाही होता है परन्तु यदि इनकी गिनती बढ़ जाए तो बढ़े हुए सिपाहियों का राशन बन्द कर दिया जाता है ओर कमेरियाँ उन्हें खाना खिलाने से इन्कार कर देती है। इस तरह फालतू सिपाही धीरे धीरे मर जाते हैं। उनके मरते ही कमेरियाँ उन्हें खा लेती है। इस तरह सिपाहियों की गिनती कभी बीस प्रतिशत से बढ़ने नहीं पाती। जीवित सिपाही को खा लेना कमेरी के बस का रोग नहीं। दस बीस भी मिल कर एक सिपाही से नहीं निबट सकतीं। यही कारण है कि फालतू सिपाहियों को भूखा रख कर मारा जाता है।"